नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय में 'इक्कसवीं सदी के पुनर्निर्माण में दर्शन एवं संस्कृति की भूमिका' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार

हमारी संस्कृति में विश्वव्यापी होने की क्षमता है - प्रो. एस. आर. भट्ट

वर्धा, दि. 26 नवंबर 2020 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के दर्शन एवं संस्कृति विभाग द्वारा विश्व दर्शन दिवस के

उपलक्ष्य में 'इक्कसवीं सदी के पुनर्निर्माण में दर्शन एवं संस्कृति की भूमिका' विषय पर 25 नवंबर को राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया । इस अवसर पर मुख्य वक्तव्य देते हुए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, (आई.सी.पी.आर.) नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष प्रो. एस. आर. भट्ट ने कहा कि दर्शन एवं संस्कृति भारतीय प्रतिभा की प्रस्तुतियां है । यह एक दूसरे से पूरक है । उन्होंने कहा कि आज का दौर अपसंस्कृति, अराजक तथा हिंसा की पृष्ठभूमि वाला है । विवेकशील मानव को इसपर विचार कर विकृतियों को दूर करने का यत्न करना चाहिए । हम संस्कारों को संस्कृति से प्राप्त कर सकते हैं । विवेकशील मनुष्य कर्म को अपनाकर विश्व जीवन को समृद्ध बना सकता है । हमारी संस्कृति में विश्वव्यापी होने की क्षमता है । आज की चुनौतियों के समाधान के लिए दार्शनिक चिंतन ही आज की आवश्यकता है । उन्होंने कहा कि ज्ञान तत्व पर तथा तत्व ज्ञान पर निर्भर करता है, यह परस्पर पूरक हैं एक दूसरे को पूरक बनकर हम भारतीय दर्शन को सैद्धांतिक और व्यावहारिक धरातल पर संस्कृति को उन्नत बनाने के लिए काम कर सकते हैं । हमारी संस्कृति में शांति और सहयोग के तत्व है । उनका कहना था कि भारतीय दर्शन और संस्कृति को सही रूप में प्रस्तुत कर 21वीं सदी का पुनर्निर्माण किया जा सकता है।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी ने कहा कि 19वीं सदी ने जैविक विज्ञान और सामाजिक दर्शन की दिशा बदल दी है और इसने 21 वीं शती में प्रखर रूप धारण किया है । क्या यही अवधारणा आगे चलेगी इसपर हमें विचार करना होगा । भूमंडलीकरण के दौर में भारत समेत सभी देश प्रभावित है ऐसे मैं दर्शन एवं संस्कृति के माध्यम से पुनर्निर्माण कैसे हो इसपर सोचना पडेगा । उन्होंने कोरोना महामारी का संदर्भ देते हुए कहा कि भारतीय दर्शन और संस्कृति के विचार से हम अपनी जमीन पर खड़े हो सकते हैं । संस्कृति संवाद का बड़ा आधार है और वह हमें समन्वय की दिशा देती है । संस्कृति समन्वय तथा परस्पर भाव की विश्व दृष्टि प्रदान करती है । उन्होंने महात्मा गांधी के दर्शन का उल्लेख करते हुए कहा कि गांधी दृष्टि सारभूत अंश है । देश को स्वतंत्र कराने और उसके बाद के गांधी दर्शन पर चिंतन जरूरी है । गांधी दर्शन 21वीं शती का समाधान है । आज की चुनौती का उत्तर भारतीय दर्शन और संस्कृति में ही मिलता है । उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद से महात्मा गांधी तक के दर्शन में

अद्वैतवाद और एकात्मवाद का चिंतन है और यही चिंतन विश्व की समस्या का समाधान प्रस्तुत करेगा तथा इससे नई दिशा का उन्मेश हो सकेगा ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि 21वीं शताब्दी की पुनर्रचना करते हुए उसे मानवीय आकार देना आज की बड़ी चुनौती है । कोरोना महामारी के इस दौर में हमारे सामने अमानवीय चेहरे को सामने लाया है । उन्होंने भारतीय दर्शन और संस्कृति के उदाहरण के रूप में महात्मा गांधी का रामराज्य और विनोबाजी के सर्वोदय की संकल्पना का संदर्भ लिया । उन्होंने कहा कि 21वीं शताब्दी की चुनौती का सामना करने के लिए अद्वैत यानी अपने- पराये के भेद को मिटाते हुए हमें समंजित प्रणाली को अपनाना होगा। हमें अपनी संस्कृति और दर्शन में इस प्रणाली से उत्तर मिल सकता है । हमारी संस्कार की प्रणाली पशु से मनुष्य बनने की है और यह चैतन्य धर्म को प्रस्तुत करती है । उन्होंने नई शिक्षा नीति का उल्लेख करते हुए कहा कि नई शिक्षा नीति से 21वीं शताब्दी के पुनर्निर्माण के सपने देखे जा सकते हैं । कार्यक्रम का स्वागत वक्तव्य तथा धन्यवाद ज्ञापन संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने किया । कार्यक्रम का संचालन दर्शन एवं संस्कृति विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. जयंत उपाध्याय ने किया।

हिंदी विश्वविद्यालयात 'एकविसाव्या शतकाच्या पुनर्उभारणीत तत्वज्ञान व संस्कृतीची भूमिका' विषयावर राष्ट्रीय वेबिनार

भारतीय संस्कृतीत विश्वव्यापकतेची क्षमता आहे - प्रो. एस. आर. भट्ट

वर्धा, दि. 26 नोव्हेंबर 2020 : महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयातील दर्शन व संस्कृती विभागाच्या वतीने विश्व तत्वज्ञान दिना निमित्त 'एकविसाव्या शतकाच्या पुनर्उभारणीत तत्वज्ञान व संस्कृतीची भूमिका' या विषयावर 25 नोव्हेंबर रोजी राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित करण्यात आला. यावेळी मुख्य वक्ता म्हणून बोलतांना भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (आई.सी.पी.आर.) नवी दिल्लीचे माजी अध्यक्ष प्रो. एस. आर. भट्ट म्हणाले की भारतीय तत्वज्ञान व संस्कृती हे भारतीय प्रतिभेचे सादरीकरण होय. भारतीय संस्कृतीत विश्वव्यापकतेची क्षमता आहे. ज्ञान तत्वावर आणि तत्व हे ज्ञानावर अवलंबून असून, आपल्या संस्कृतीत शांतता व सहयोगाचे तत्व आहे. भारतीय तत्वज्ञान व संस्कृती मधूनच 21व्या शतकाची पुनर्उभारणी शक्य आहे असे ते म्हणाले.

विश्वविद्यालयाचे कुलाधिपती प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी म्हणाले की 19व्या शतकाने जैविक विज्ञान व सामाजिक तत्वज्ञानाची दिशा बदलवली असून 21व्या शतकावर त्याचा प्रकर्षाने प्रभाव पडला आहे. जागतिकीकरणाने भारतासोबत सर्व देश प्रभावित झाले, अशावेळी तत्वज्ञान व संस्कृतीच्या माध्यमातून पुनर्उभारणीचा विचार करावा लागणार आहे. महात्मा गांधी यांच्या तत्वज्ञानाचा उल्लेख करून ते म्हणाले गांधीजीच्या विचारातून 21व्या शतकातील आव्हानांवर उत्तर सापडू शकते. स्वामी विवेकानंदापासून तर महात्मा गांधी यांच्या पर्यंतच्या चितंकाच्या विचारात एकात्मवादाचे चिंतन आहे आणि हेच चिंतन विश्वाच्या समस्येवर उपयोगी ठरेल व यातून नवी दिशा गवसणार आहे.

आपल्या अध्यक्षीय भाषणात प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल म्हणाले की 21व्या शताब्दीची पुनर्रचना करतांना त्याला मानवीय आकार देणे आजचे मोठे आव्हान आहे. महात्मा गांधीजीची रामराज्य व विनोबाजींची सर्वोदय संकल्पना हे भारतीय तत्वज्ञान व संस्कृतीचे मोठे उदाहरण होय. नवीन शैक्षणिक धोरणातून 21व्या शतकाच्या पुनर्उभारणीचे स्वप्न बघितले जावू शकते असे मत प्रो. शुक्ल यांनी व्यक्त केले. कार्यक्रमाचे स्वागत भाषण व आभार प्रदर्शन संस्कृती विद्यापीठाचे अधिष्ठाता प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी यांनी केले तर संचालन दर्शन व संस्कृती विभागाचे सहायक प्रोफेसर डॉ. जयंत उपाध्याय यांनी केले. वेबिनारमध्ये विद्यापीठाचे अध्यापक व विद्यार्थी सहभागी झाले होते.